क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277to 81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 314 वाँ वर्ष है

वर्तमान परिवेश में धर्म का मौलिक स्वरूप

इलाहाबाद 26 जून, 2014

धर्म की शाब्दिक एवं तात्विक विवेचना

शब्द ही ब्रह्म है। अक्षर भी ब्रह्म है। "धर्म" शब्द 'ध्', 'अ', 'र्', 'म्' के संयोग से बना है। 'ध्' का अभिप्राय धारण करना है। 'ध' में अ तीन प्रकार की शक्तियों ब्रह्मा, विष्णु व शिव का संबोधन है। 'र्' निराकार शक्ति को व्यक्त करता है। 'म' का अभिप्राय साकार के परिवर्तनशील अस्तित्व से है जिसे शिव का साकार रूप कहते हैं।

रेलिजन क्या है :

"रेलिजन" (Religion) शब्द लैटिन भाषा के रेलिगेयर (Religare) शब्द से बना है। रेलिगेयर (Religare) का अभिप्राय है जोडना। वह तत्व जो जोडने के लिए ज्ञान, शक्ति, विचार आदि प्रदान करे, रेलिजस (Religious) तत्व कहा जाता है।

सनातन धर्म का वास्तविक स्वरूप :

धर्म सनातन है। सनातन का अभिप्राय जो सार्वकालिक हो, जिसका अस्तित्व

अतीत–वर्तमान व भविष्य में सदैव बना रहे, उसे सनातन कहते हैं। धर्म का अस्तित्व सनातन है।

हम जो कुछ भी धारण किये हैं वह 'अ' है (ध् + अ) अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु व शिव का अस्तित्व है जो 'र्' निराकार शक्ति की अद्भुत अभिव्यक्ति है। 'र्' का 'ध' के रूप में और 'ध' का 'म' के रूप में प्रकट होना ही प्रभु की लीला है। यह लीला सनातन है। यहॉ 'म' का अभिप्राय शिव शक्ति का दृश्य रूप जिसे हम सिर से पैर तक की अलौकिक रचना के रूप में अनुभव करते हैं। यही हमारा दृश्य रूप है।

मानव का एकमात्र लक्ष्य है सनातन धर्म की अनुभूति में बना रहे। यही ईश्वर अनुभूति की अवस्था है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करें :

वैज्ञानिक तरीके से प्रयोग करके सिद्ध हो गया है कि क्रियायोग के अभ्यास से सरलता के साथ मनुष्य सनातन धर्म की अनुभूति कर लेता है। ऐसी अवस्था में मानव मात्र में आत्मिक एकता स्थापित हो जाती है। आपसी भेद मिट जाते हैं, अहंकारिक लडाइयॉ समाप्त हो जाती हैं और मनुष्य के अन्दर सात्विक क्रियाशीलता जागृत हो जाती है।

सनातन धर्म की अनुभूति में मनुष्य के अंदर "एकोऽहम्बहुष्यामि" का ज्ञान जागृत हो जाता है। वह अनुभव करता है कि एक ही परमतत्व का अस्तित्व है, वही दृश्य और अदृश्य जगत के रूप में प्रकाशित है।

हम भगवान किसे कहें :

जिस तत्व से रक्षा होती है, सम्पूर्ण ज्ञान व परमानन्द की प्राप्ति होती है, सभी प्रकार के कष्ट व अज्ञानता दूर हो जाती है, उसे भगवान, प्रभु, ईश्वर, परमात्मा आदि नामों से संबोधित करते हैं। जब मनुष्य अपने अस्तित्व को देखता है, उसके अस्तित्व की उत्पत्ति व उसमें संरक्षण व परिवर्तन के पीछे माता–पिता, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आसमान, वनस्पति जगत, जन्तु जगत, सूरज, चॉद, तारे आदि हैं। बिना इनके मनुष्य का दृश्य अस्तित्व संभव नहीं है। 24 तत्व – चित्त, अहंकार, बुद्धि, मन, 10 इन्द्रियॉ, 5 तन्मात्राऍं, 5 स्थूल तत्व आदि मनुष्य के अस्तित्व की रचना, संरक्षण व परिवर्तन के लिए आवश्यक है। उपयुक्त सभी रचनाऍं परमात्मा के प्रकाश का घनीभूत रूप है। सभी पूज्य हैं।

साधुवाद के साथ,
निरन्तर दिव्य प्रेम में

स्वामी श्री योगी सत्यम्